LOK SABHA

Thursday, May 10, 1973/Vaisakha 20, 1895 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

भारतीय शिविरों में पाकिस्तानी युद्धबंदियों को दी गई अतिरिक्त सुविधाएं

*1041. **श्री शंकर दयाल सिंह** क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) पाकिस्तानी युद्धबन्दियो को वे कौन सी अतिरिक्त सुविधाए दी जा रही हैं जो आमतौर पर जेनेवा कनवेन्शन के अन्तर्गत दी जाने वाली सुविधाओ के अतिरिक्त है,

(ख) क्या उन्होंने हाल मे अपने बिहार के दौरे के दौरान पाकिस्तानी युद्धबन्दी शिविरो का निरीक्षण किया था,

(ग) क्या अधिकारियो तथा सामान्य युद्ध बदियो ने उनसे निरीक्षण के दौरान कुछ और अधिक सुविधाओ की माग की थी, और

(घ) यदि हा, तो तत्सबधी ब्यौरा क्या है ?

रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन) मे राज्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल) : (क) जिनेवा समझौते मे केवल यह व्यवस्था है कि युद्धबन्दियो के साथ मानवोचित व्यवहार किया जाए और भोजन, वस्त्र, चिकित्सा सुविधाए आदि पर्याप्त होनी चाहिएं। ठीक सुविधाओ का विशेष रूप से उल्लेख नही किया गया है। भारत सरकार युद्धबन्दियो के साथ इन्ही सिद्धातो के अनुसार व्यवहार करती है। अत अतिरिक्त, सुविधाओ का प्रश्न नही उठता।

(ख) जी हा, श्रीमन्।

(ग) और (घ) युद्धबन्दियो द्वारा अस्पताल मे जल ठडा करने की मशीन, वार्डों मे नकली छत और एक युद्धबन्दी को महानुभूति के आधार पर स्वदेश वापसी आदि जैसे कुछ अनुरोध किए गए थे।

श्री शंकर दयाल सिंह हमारे गरीब देश का एक करोड रुपया प्रति माह युद्धबन्दियो पर खर्च हो रहा है। मैं माननीय मत्री महोदय से जानना चाहता हू कि क्या हमारे जो भारतीय युद्धबन्दी थे उन के साथ पाकिस्तान ने वही सुलूक किया था—जैनेवा कन्वेन्शन के अनुसार—जैसा सुलूक हम उन के साथ कर रहे है ? मैं यह भी जानना चाहता हू—जैनेवा कन्वेन्शन मे जो सुविधाये कही गई है, उन से कितनी अधिक सुविधाये हम उन को दे रहे है, क्योकि मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हू कि उन को कुछ अतिरिक्त सुविधाये दी जा रही हैं जो हमारे युद्धबन्दियो को नही दी गई, इस तरह का तफरूका क्यो किया जा रहा है ?

श्री विद्या चरण शुक्ल : मैंने बताया है कि हम लोग कोई अतिरिक्त सुविधा ऐसी नही दे रहे हैं, जिन्हे अतिरिक्त सुविधा कहा जा सकता है—जैनेवा कन्वेन्शन के आधार पर। एक दूसरी बात यह भी है कि अगर कोई दूसरा व्यक्ति या देश कोई गल्ती करे तो हम भी वही गल्ती करे, गल्ती का जवाब गल्ती से दे—यह ठीक नही है। हमारे युद्धबन्दी जब पाकिस्तान मे थे, उन के साथ जैनेवा कन्वेन्शन के अनुसार ठीक से व्यवहार नही किया गया, लेकिन हम ने अपनी नीति के तौर पर तय किया था कि उस दुर्व्यवहार का जवाब हम दुर्व्यवहार कर के नही देंगे। बल्कि इन्टरनेशनल कमेटी आफ रेडक्राम के द्वारा हम ठीक ढग से व्यवहार करने की कोशिश करेंगे। इसलिये

जैसा माननीय सदस्य ने कहा है कि उन को कोई ऐसी अतिरिक्त सुविधा दे रहे हैं जो हमारे युद्धबन्दियो को नही मिल रही थी—ऐसी बात ठीक नही है।

श्री शंकर दयाल सिंह : रक्षा मत्रालय की ओर से इस वर्ष जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है उस मे यह कहा गया है—

> "During the period the Indian personnel remained in Pakistani camps, reports of their ill-treatment . "

इसीलिये मैने यह सुविधा का प्रश्न पूछा था।

अब मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हू—अभी हाल मे हमारे रक्षा मंत्री जी बिहार के कुछ कैम्पो मे जा कर पाक युद्धबन्दियो से मिले थे और पाक युद्धबन्दियो ने उन से कुछ फरमाइशे भी की थी तथा कुछ अशोभनीय बात भी की थी। क्या यह सच है कि जो पाक युद्धबन्दी थे उन मे से 23 भाग गये, 31 मारे गये और 66 घायल हुए तथा वे बराबर इस प्रकार के प्रयास कर रहे है?

श्री विद्या चरण शुक्ल : माननीय सदस्य ने जो मूल प्रश्न पूछा था, उस के भाग ख और ग मे यही बाते पूछी गई थी जो उन्होने इस पूरक प्रश्न मे पूछी है। मैन ख के जवाब म कहा है—जी हा तथा ग के जवाब मे कहा है कि उन के सामने उन्होने कुछ मागे रखी थी, उन के बारे मे हम विचार कर रहे हैं। जहा तक अशोभनीय व्यवहार का प्रश्न है, उसके बारे मे मुझे कोई सूचना नही है।

श्री मधु लिमये : युद्धबन्दियो को जो सुविधाये दी जाती है, उन क साथ जो आचरण किया जाता है, उन के बारे मे ख्वामख्वाह दुनिया मे भारत और बगला देश का बदनाम किया जा रहा है। मै सरकार से जानना चाहता हू कि जिन युद्धबन्दियो के ऊपर कोई अभियोग नही है, ऐसे लोगो को बगला देश के प्रधान मत्री से बात कर के छोड देने के बारे मे क्या सरकार विचार कर रही है?

श्री विद्या चरण शुक्ल : तरह - तरह के सुझाव इन के बारे मे.....

श्री मधु लिमये : सुझाव नही है, मैं जानकारी चाहता हू।

श्री विद्या चरण शुक्ल : मैं वही बतला रहा हू। तरह-तरह के सुझाव हैं और उन मे वह सुझाव भी है जो माननीय सदस्य ने दिया है। इन पर सोच-विचार किया जा रहा है, उन मे क्या सम्भव होगा और क्या सम्भव नही होगा, अभी मेरे लिये कुछ कहना सम्भव नही है।

श्री बूटा सिंह : अभी मत्री महोदय ने बताया कि हमारी सरकार ने जैनेवा समझौते के अन्तर्गत पाकिस्तानी युद्धबन्दियो को सुविधाये दी हैं। अध्यक्ष महोदय, हमारे जो युद्धबन्दी पाकिस्तान ने पकडे थे, उन मे हमारे नौजवानो के अलावा बहुत से ऐसे नागरिक थे, उन मे आप के क्षेत्र के भी बहुत से लोग थ, जिन को पाकिस्तान ने कैदी बना लिया था। हमारे उन नौजवानो और फौजियो के साथ जो सुलूक हुआ, उन की दास्तान सब को मालूम है, अच्छे शरीर वालो को भी अपाहिज बना दिया गया, गिरफ्तारी के बाद जानबूझ कर उन को जख्मी किया गया। इन के अलावा जो नागरिक पकडे गये थे, वहा के लोगो के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया, उस की दास्तान भी बडी दर्दनाक है। मै जानना चाहता हू कि आप ने किसी माध्यम से—स्विस एम्बेसी या इन्टरनेशनल कमेटी आफ रेडक्रास के द्वारा पता लगाया है कि पाकिस्तानियो ने किस-किस तरह का दुर्व्यवहार हमारे युद्धबन्दियो के साथ किया है और क्या हमारी सरकार ने इस के बारे मे पाकिस्तान सरकार से किसी स्तर पर बातचीत की है?

श्री विद्या चरण शुक्ल मैंने पहले एक पूरक प्रश्न के उत्तर मे बताया है कि इस तरह का दुर्व्यवहार हमारे युद्धबन्दियो के साथ हुआ है। जहा तक नागरिको का सम्बन्ध है, उस के बारे मे भी शिकायते आई थी तथा जो साधन उपलब्ध है जैसे स्विस राजदूतावास तथा इन्टरनेशनल

कमेटी आफ़ रेडक्राम इन दोनो के द्वारा यह प्रश्न पाकिस्तान सरकार के साथ उठाया गया था, परन्तु इस का कोई सन्तोषप्रद उत्तर उन की तरफ़ से नही मिला है और न ही कोई सन्तोषप्रद कार्यवाही की गई है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष जी, क्या यह सच है कि पाकिस्तानी युद्धबंदियो को सरकार मे जो सुविधाये दी हैं उनमे एक शिविर से भाग जाने की सुविधायें भी दी गई है? यदि नही, तो यह कैसे सम्भव होता है कि पाकिस्तानी युद्धबदी शिविर मे बहुत लम्बी सुरगे खोदकर शिविर से भाग जाने से सफल हो जाते है और सरकार को पता तक नही लगता कि सुरग खोदी जा रही है?

श्री विद्या चरण शुक्ल : माननीय सदस्य जानते है कि जेनेवा कन्वेन्शन के अनुसार और वैसे भी यह एक मानी हुई बात है कि युद्धबन्दी जो देश मे रहते है वे भागने का प्रयत्न करते है और कर सकते है। पर जहा तक भारत का सवाल है, माननीय सदस्यो को यह ज्ञात होना चाहिए कि कितनी सख्या मे युद्धबन्दी है और उसके अनुपात मे देखा जाये कि कितने युद्धबदियो ने भागने का प्रयत्न किया है तो उनकी सख्या नगण्य है और जो भागने मे सफल हुए है वह बहुत कम है और उनमे से बहुत से पकड लिए गए है। ऐसे बहुत कम लोग है जो भागने मे सफल हुए है। माननीय सदस्य ने एक व्यगात्मक सवाल पूछा कि भागने की सुविधा दी है'

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : फिर वे सुरगे कैसे खोद लेते है?

श्री विद्या चरण शुक्ल : लेकिन वह पकड लिए गए हैं। एक आध जगह ही उनको सफलता मिली है लेकिन बाद में पकड लिए गए उनको सफलता मिलने से पहले ही। इसलिए हम दावे के साथ कह सकते हैं कि उनका जो इन्तजाम किया गया है वह बहुत अच्छा इन्तजाम है।

SHRI SAMAR GUHA: India and Bangladesh together made a joint proposal to the Government of Pakistan in regard to the exchange of prisoners as also for the exchange of the citizens of Bangla Desh and citizens of Pakistan in Bangla Desh. What happened to that proposal? Has Pakistan spurned that offer?

MR. SPEAKER: It is not relevant to this question; I cannot hold it relevant.

Development of Port Blair, Andamans as an Advance Naval Base

†

*1042. SHRI M. RAM GOPAL REDDY:
SHRI P. GANGADEB:

Will the Minister of DEFENCE be pleased to state:

(a) whether Government propose to develop Port Blair, Andamans as an advance Naval Base; and

(b) if so, the main features thereof?

THE MINISTER OF STATE (DEFENCE PRODUCTION) IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA): (a) Yes, Sir.

(b) The plans provide for the development of infrastructure necessary for the defence of these islands. The phased development of Port Blair as an Advance Naval Base has been approved. A Base Repair Organisation is proposed to be set up at an estimated cost of about Rs. 1.53 crores. A Meteorological Office was sanctioned as part of the naval establishment at Port Blair. The Honourable Members will appreciate that it will not be in public interest to disclose further information on the subject.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY: There is no further question.

MR. SPEAKER: That is very good; I shall give you some opportunity on another occasion.

SHRI P. GANGADEB: In view of the fact that this area occupies a strategic